

# हस्तलिखित ग्रंथों की परंपरा में अर्थशास्त्र

मिताली कुमावत  
एम.ए.अर्थशास्त्र की छात्रा  
एपेक्स विश्वविद्यालय

## भूमिका

मानव सभ्यता के विकास और उसकी प्रगति का सीधा संबंध ज्ञान के संरक्षण और उसे आगे पहुँचाने से रहा है। छापाखाने या इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के अस्तित्व से पहले, पांडुलिपियाँ विचारों को दर्ज करने और पहुँचाने का प्रमुख साधन थीं। इन पांडुलिपियों में केवल धार्मिक और दार्शनिक ग्रंथ ही नहीं बल्कि शासन, वाणिज्य, चिकित्सा और समाज से संबंधित व्यावहारिक मार्गदर्शन भी संचित था। अर्थशास्त्र में इनका विशेष महत्व है क्योंकि ये इस बात के प्रमाण देती हैं कि प्राचीन समाजों ने उत्पादन, व्यापार, कराधान और संसाधनों के वितरण की व्यवस्था किस प्रकार की। इनके बिना प्राचीन अर्थव्यवस्थाओं की हमारी समझ अधूरी रह जाती।

## पांडुलिपि की परिभाषा

'पांडुलिपि' शब्द लैटिन भाषा के दो शब्दों मैनु (हाथ) और स्क्रिप्टस (लिखा हुआ) से बना है, जिसका अर्थ है "हाथ से लिखा गया"। ताड़पत्र, भोजपत्र, चर्मपत्र या कागज पर हाथ से लिखे गए ग्रंथों को पांडुलिपि कहा जाता था। आज अकादमिक भाषा में पांडुलिपि शब्द अप्रकाशित पुस्तकों, लेखों या शोधपत्रों के प्रारूप के लिए भी प्रयुक्त होता है। किंतु ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ में यह मुख्यतः उन प्राचीन और मध्यकालीन हस्तलिखित ग्रंथों के लिए प्रयोग होता है जो सभ्यताओं की बौद्धिक धरोहर को संरक्षित रखते हैं।

## पांडुलिपियों का महत्व

पांडुलिपियाँ केवल अतीत की अवशेष नहीं हैं, उनका महत्व इस तथ्य में है कि वे हमें सीधे प्राचीन समाजों की विचारधारा और परंपराओं से जोड़ती हैं।

- 1. ज्ञान का संरक्षण** – यह बौद्धिक परंपराओं को आगे बढ़ाती हैं और विचारों को पीढ़ियों तक जीवित रखती हैं।
- 2. सांस्कृतिक पहचान** – इनमें भाषाएँ, लिपियाँ और अभिव्यक्ति के स्वरूप सुरक्षित हैं जो सभ्यताओं को विशिष्ट बनाते हैं।
- 3. ऐतिहासिक प्रमाण** – ये प्राचीन राजनीतिक व्यवस्थाओं, सामाजिक ढाँचों और कानूनों के पुनर्निर्माण में सहायक होती हैं।
- 4. वैज्ञानिक योगदान** – अनेक पांडुलिपियों में चिकित्सा, गणित और खगोलशास्त्र का ज्ञान सुरक्षित है, जो प्राचीन उन्नत सोच का परिचायक है।
- 5. आर्थिक दृष्टिकोण** – इनमें कर व्यवस्था, व्यापार, संपत्ति अधिकार, राजस्व प्रणाली और धन के वितरण का विवरण मिलता है।

### भारत की पांडुलिपि परंपरा

भारत पांडुलिपियों की धरोहर के मामले में अत्यंत समृद्ध है। अनुमानतः लाखों पांडुलिपियाँ मंदिरों, विश्वविद्यालयों, पुस्तकालयों और निजी संग्रहों में सुरक्षित हैं। ये ब्राह्मी, शारदा, देवनागरी, तमिल, फ़ारसी जैसी अनेक लिपियों में उपलब्ध हैं। इनके विषय धर्म, कानून और दर्शन से लेकर चिकित्सा, खगोलशास्त्र और अर्थशास्त्र तक फैले हुए हैं।

नातंदा और तक्षशिला जैसे प्राचीन शिक्षा केंद्रों में हजारों पांडुलिपियाँ संग्रहित थीं और ये विद्वत् संवाद के केंद्र थे। मध्यकाल में राजदरबारों और शासकों ने लेखकों व लिपिकारों को संरक्षण दिया, जिन्होंने इन ग्रंथों की नकलें तैयार कीं, उन पर टीकाएँ लिखीं और उनका संरक्षण किया। मुगल दरबार ने तो प्रशासनिक अभिलेख और आर्थिक सर्वेक्षण भी तैयार करवाए, जिनसे उस समय की अर्थव्यवस्था के सूक्ष्म विवरण प्राप्त होते हैं। इस प्रकार भारतीय पांडुलिपियाँ केवल आध्यात्मिक और दार्शनिक ग्रंथ ही नहीं बल्कि शासन और वाणिज्य की व्यवहारिक मार्गदर्शिका भी हैं।

## पांडुलिपियाँ और अर्थशास्त्र

अर्थशास्त्र के अध्ययन में पांडुलिपियाँ विशेष रूप से उपयोगी हैं क्योंकि ये दर्शाती हैं कि आधुनिक सिद्धांतों से बहुत पहले समाज संसाधनों की कमी से कैसे निपटते थे।

**कौटिल्य का अर्थशास्त्र** – भारत की सर्वाधिक प्रसिद्ध आर्थिक पांडुलिपि। यद्यपि यह राज्यशास्त्र का ग्रंथ है, इसमें कर नीति, बाजार विनियमन, मुद्रा व्यवस्था और सार्वजनिक व्यय का विस्तार से वर्णन है। इसकी अनेक बातें आधुनिक सार्वजनिक वित्त और राजनैतिक अर्थशास्त्र से मिलती-जुलती हैं।

**वैदिक एवं महाकाव्य साहित्य** – ऋग्वेद, महाभारत और बौद्ध जातक कथाओं में कृषि, विनिमय प्रणाली, श्रम विभाजन और व्यापारी संघों के उल्लेख मिलते हैं।

**मध्यकालीन दस्तावेज़** – सल्तनत और मुगल काल की पांडुलिपियों में भूमि राजस्व, व्यापार कर और कृषि व्यवस्था का विवरण मिलता है। अकबर का आईन-ए-अकबरी फसलों की पैदावार, मूल्य और कर नीति के आँकड़े प्रस्तुत करता है।

**धन और नैतिकता पर ग्रंथ** – जैन और बौद्ध पांडुलिपियाँ धन, दान और संयम पर बल देती हैं। ये विचार आज के सतत् विकास और नैतिक उपभोग की चर्चाओं से मेल खाते हैं।

## पांडुलिपियों की समकालीन प्रासंगिकता

यद्यपि प्राचीन, पांडुलिपियाँ आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं।

- ऐतिहासिक अर्थव्यवस्थाओं का पुनर्निर्माण** – यह दिखाती है कि पूर्व-औद्योगिक समाजों में बाजार, कर व्यवस्था और शासन कैसे कार्य करते थे।
- नीतिगत शिक्षा** – न्यायपूर्ण कराधान और प्रजा-कल्याण जैसे विचार आज भी नीति-निर्माण में मार्गदर्शक हैं।
- नैतिक और आचारिक आयाम** – ये याद दिलाती हैं कि अर्थशास्त्र केवल तकनीकी नहीं बल्कि नैतिकता और न्याय से भी जुड़ा है।

4. **वैश्विक धरोहर** – भारतीय, चीनी और मध्य-पूर्वीय पांडुलिपियाँ दिखाती हैं कि संगठित आर्थिक चिंतन अनेक सभ्यताओं में स्वतंत्र रूप से विकसित हुआ।

### संरक्षण की चुनौतियाँ

पांडुलिपियाँ नाज़ुक होती हैं और जलवायु, आर्द्रता, कीटों तथा उपेक्षा के कारण नष्ट हो सकती हैं। कई पांडुलिपियाँ ऐसी लिपियों और बोलियों में हैं जिन्हें आज बहुत कम लोग समझते हैं। भारत का राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन और वैश्विक स्तर पर चल रहे डिजिटलीकरण के प्रयास इस धरोहर को बचाने में सहायक हैं। डिजिटलीकरण इन्हें भौतिक क्षरण से तो बचाता ही है, साथ ही विश्वभर के शोधकर्ताओं के लिए उपलब्ध भी कराता है।

### अर्थशास्त्र शिक्षा में भूमिका

अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों के लिए पांडुलिपियाँ केवल ऐतिहासिक आकर्षण नहीं हैं। ये:

1. कर और शासन की उत्पत्ति को समझने में सहायक हैं।
2. दिखाती हैं कि प्राचीन समाजों ने दुर्लभ संसाधनों का बँटवारा कैसे किया।
3. आधुनिक सिद्धांतों की जड़ों को स्पष्ट करती हैं।
4. आर्थिक व्यवस्थाओं की नैतिक नींव पर चिंतन को प्रेरित करती हैं।

### संदर्भ पुस्तकें

#### पुस्तकें

- कौटिल्या (1992). अर्थशास्त्र (अनुवादक: आर. शमशास्त्री)। बंगलोर: गवर्नमेंट प्रेस। (मूल कार्य लगभग 300 ईसा पूर्व)
- रे, देब्राजा (1998). डेवलपमेंट इकॉनॉमिक्स। प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।
- ब्लैंचर्ड, ओलिवियरा (2017). मैक्रोइकॉनॉमिक्स (7वाँ संस्करण)। पियर्सन।
- वूल्ड्रिज, जे. एमा (2020). इंट्रोडक्टरी इकॉनॉमेट्रिक्स: अ मॉडर्न अप्रोच (7वाँ संस्करण)। सेंगेज लर्निंग।

## शोधपत्र / आलेख

- आल्टेकर, ए. एस। (1937). स्टेट एंड गवर्नमेंट इन एशिएट इंडिया। मोतीलाल बनारसीदास।
- हबीब, इरफान। (1963). द एग्रेसियन सिस्टम ऑफ मुग़ल इंडिया (1556–1707)। एशिया पब्लिशिंग हाउस।
- ठाकुर, वी. के। (1995). अर्बन सेंटर्स एंड अर्बनाइजेशन ऐज रिफ्लेक्टेड इन द पाली लिटरेचर। मोतीलाल बनारसीदास।
- चट्टोपाध्याय, बी. डी। (1994). द मेकिंग ऑफ अलर्टी मीडीवल इंडिया। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

## आधुनिक अध्ययन

- सिंह, उपेंद्र। (2008). ए हिस्ट्री ऑफ एशिएट एंड अलर्टी मीडीवल इंडिया। पियर्सन एजुकेशन इंडिया।
- नेशनल मिशन फॉर मैन्युस्क्रिप्ट्स। (2005). मैन्युस्क्रिप्ट हेरिटेज ऑफ इंडिया: एन ओवरव्यू। नई दिल्ली: एनएमएम पब्लिकेशन।
- सुब्रह्मण्यम, संजय। (2012). कोर्टली एनकाउंटर्स: ट्रांसलेटिंग कोर्टलिनेस एंड वायलेंस इन अलर्टी मॉडर्न यूरेशिया। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- हीस्टरमैन, जे. सी। (1985). द इनर कॉन्फ्लिक्ट ऑफ ट्रेडिशन: एस्सेज इन इंडियन रिचुअल, किंगशिप एंड सोसाइटी। यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस।